## क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1.श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 31 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।

2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलने से बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।

3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।

4. पूरे देश में धार्मिक अवसरों पर प्रवचन/विधान आदि कार्यों के निमित्त भ्रमण के अवसर के साथ-साथ समाज के साथ रहने का प्रायोगिक ज्ञान सीखने को मिलता है।

5.जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।

6. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगटती है।

7. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।

8. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट लिस्ट में स्थान प्राप्त करते हैं।

9. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।

10. दर्शन व संस्कृत विषय के साथ आई.ए.एस. जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षा व आर.ए.एस. आदि प्रान्तीय प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्णता के अवसर प्राप्त होते हैं।

11. छात्रों की वक्तृत्व शैली, तर्क शैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ ... तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **18 मई से 4 जून ,08 तक मंगलायतन-अलीगढ़(उ.प्र.)** में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें। **ह्न पीयूष शास्त्री एवं धर्मेन्द्र शास्त्री**

**फॉर्म हेतु पता :** श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय,
ए-4, बापूनगर, जयपुर-15, फोन-0141-2705581, 2707458




# वीतराग-विज्ञान

**वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।**
**वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।**

वर्ष : 26 296 अंक : 8


## जे दिन तुम विवेक बिन खोये...

**जे दिन तुम विवेक बिन खोये।।टेक।।**

**मोह वारुणी पी अनादितैं, परपद में चिर सोये।**
**सुखकरंड चितपिंड आपपद, गुन अनन्त नहिं जोये।।1।।**

**होय बहिर्मुख ठानि राग रुख, कर्म बीज बहु बोये।**
**तसु फल सुख दु:ख सामग्री लखि, चित में हरषे रोये।।2।।**

**धवल ध्यान शुचि सलिलपूरतैं, आस्रव मल नहिं धोये।**
**परद्रव्यनि की चाह न रोकी, विविध परिग्रह ढोये।।3।।**

**अब निज में निज जान नियत तहाँ निज परिनाम समोये।**
**यह शिवमारग समरस सागर 'भागचंद' तो ये।।4।।**

**ह्न पण्डित भागचन्दजी**

### डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

| | | |
|---|---|---|
| 8 से 10 मार्च, 08 | जयपुर | विश्वविद्यालय में तत्त्व संगोष्ठी |
| 1 से 8 अप्रैल, 08 | कोलकाता | विधान व प्रवचन |

## पराश्रय से संसार, स्वाश्रय से मुक्ति

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दिस्वामी के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 46 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

**अविद्वान्पुद्गलद्रव्यं योऽभिनन्दति तस्य तत् ।**
**न जातु जन्तोः सामीप्यं चतुर्गतिषु मुञ्चति ।।46।।**

जो अविद्वान (हेय-उपादेय को न जाननेवाला ) पुद्गल द्रव्य को श्रद्धता है, उस बिचारे जीव का समीपपना वह पुद्गल द्रव्य नरकादि चार गतियों में कभी भी नहीं छोड़ता।

यह पूज्यपादस्वामी द्वारा रचित इष्टोपदेश शास्त्र है, इसकी 45 वीं गाथा में यह बात आयी थी कि एक निज आत्मा ही सुखरूप है, इसके सिवाय अन्य सर्व वस्तुयें दुःखरूप हैं। अपने निज शुद्धात्मा के सिवाय शुभाशुभ राग, कर्म, शरीर, वाणी, मन आदि परपदार्थों का आश्रय/सत्कार करने से दुःख होता है और निज ज्ञायक स्वभाव का आश्रय करने से सुख होता है।

अपनी आत्मा ही सुख और आनन्दरूप है। निज हित के अर्थ उसको जानकर ही महापुरुषों ने आत्मा के स्वरूप में स्थिर होने का उद्यम किया है।

इस 46 वीं गाथा में परद्रव्य का राग करने से होनेवाले दोषों को बताया है।

मेरा एक आत्मा ही मेरे लिये उपादेय है, उसके सिवाय पुण्य-पाप, शरीर, कर्म इत्यादि सर्व परद्रव्य मेरे लिये हेय हैं ह्न ऐसा हेय-उपादेय का विवेक जिसको नहीं है, उन्हें यहाँ अविद्वान कहा है। विद्वान का अर्थ बहुत जानकार और अविद्वान का अर्थ कम जाननेवाला ह्न ऐसा अर्थ यहाँ नहीं है। यहाँ तो हेय-उपादेय तत्त्वों के स्वरूप को जो नहीं समझते उन्हें अविद्वान कहा है, वे ही अविवेकी अनसमझ-अज्ञानी हैं।

जो जीव शरीर, कर्म आदि पुद्गल के कार्यों को अपना मानकर पुद्गल का सत्कार करते हैं और अपने ज्ञायक स्वभाव में हकारपूर्वक सत्कार नहीं करते,

उनको पुद्गल की समीपता अर्थात् सम्बंध नहीं छूटता। जो जिसका सत्कार करता है, उसको उसकी समीपता छूटती नहीं है।

मैं तो शुद्ध चैतन्य हूँ और चैतन्य परिणति ही मेरा कार्य है ह्न ऐसा न स्वीकार कर अपने को शरीरादि स्वीकार करनेवाले को शरीरादि का सम्बन्ध नहीं छूटता।

शुभाशुभ भावों का सत्कार भी छोड़ने लायक है। भले ही तीर्थंकर प्रकृति के योग्य शुभभाव हो, जगत को उपदेश देने का भाव हो, लेकिन हेय है; उपादेय नहीं। उपादेय तो एक शुद्धात्मा ही है। वह शुद्धात्मा तो सदा मौजूद है, उसकी मौजूदगी होने पर भी जो जीव उसका सहवास छोड़कर पुद्गल का सहवास करता है, उसको पुद्गल छोड़ता नहीं है अर्थात् वह जीव चार गति के भवभ्रमण से नहीं छूट पाता।

जिसको बंध और बंधभावों के समीपपने और सत्कारपने का भाव होता है, वह तो मिथ्यादृष्टि है तथा उसको बंध का सत्कार होने से कर्म बंधते हैं; पर जो जीव बंधभावना का सत्कार छोड़कर शुद्धस्वभाव का सत्कार करते हैं, उन्हें कर्म नहीं बंधते। ज्ञानियों को तीर्थंकर प्रकृति के योग्य भाव होते हैं और तीर्थंकर प्रकृति बंधती है; पर उनके हृदय में उसका आदर-सत्कार नहीं होता। जिनको राग और बंध का आदर है ह्न ऐसे मिथ्यादृष्टियों को तीर्थंकर नामकर्म बंधता ही नहीं, उल्टा चार गति में भ्रमण होता है।

जो जीव राग, शरीर, कर्म और बाह्य संयोगों को अपनेरूप मानते हैं, वे अज्ञानी हैं। यह अलौकिक बात करोड़ों उपाय करके भी समझने योग्य है।

छहढाला में दौलतरामजी ने लिखा है ह्न

**धन, समाज, गज, बाज, राज तो काज न आवे।**
**ज्ञान आपको रूप भये, फिर अचल रहावे।।**
**तास ज्ञान को कारण, स्व-पर विवेक बखानो।**
**कोटि उपाय बनाय, भव्य ताको उर आनो।।**
**लाख बात की बात, यही निश्चय उर लाओ।**
**तोरि सकल जग द्वंद, फंद निज आतम ध्याओ।।**





इष्टोपदेश ऐसा कहता है कि उपदेश देने का भाव भी इष्ट नहीं है। गणधरों ने शास्त्र रचे, उन्हें शास्त्र रचने का शुभविकल्प आया, पर उपदेश तो यही कहता है कि विकल्प हितरूप नहीं है। यदि शास्त्र रचने का भाव हितरूप हो तो विकल्प और अपना स्वरूप दोनों एकरूप हो जायें, लेकिन ऐसा होता नहीं।

व्यवहाररत्नत्रय को हितकारी मानकर मिथ्यादृष्टि पुद्गल की समीपता करके अपने शुद्धस्वरूप से दूर खिसक गया है।

ज्ञानी को व्यवहाररत्नत्रय के भाव तो होते हैं ?

जिसने स्वभाव की समीपता की है, उस ज्ञानी को भी अपनी कमजोरी के कारण व्यवहाररत्नत्रय का शुभभाव आता है। जिसको निश्चय प्रगट हुआ है, उसको ऐसे व्यवहाररूप शुभभाव आते हैं, उन शुभभावों को टालना शक्य नहीं है। जिसतरह से परद्रव्य का अभाव नहीं कर सकते; उसीतरह कमजोरीवश होनेवाले विभावों का अभाव भी नहीं कर सकते।

भगवान आत्मा को अपने चैतन्य ज्ञायकस्वरूप की समीपता होने से विकार, कर्म, शरीरादि की असमीपता होती है - उसका नाम विवेक है। अपने स्वभाव की अपेक्षा से सभी परवस्तुयें अवस्तु है। स्वभाव में न होने से व्यवहाररत्नत्रय का शुभभाव भी अवस्तु ही है।

अपने ज्ञायकस्वभाव की समीपता अर्थात् स्वभाव के आश्रय से शुद्धपर्याय प्रकट होती है, वह हितरूप है और सामान्यस्वभाव की असमीपता तथा विशेष (पर्याय) की समीपता होने से रागादि होते हैं, जो अहितरूप हैं।

चेतन तो वीतरागस्वभाव का पिंड, अकषायस्वरूप है, जो उसकी समीपता नहीं करके पुण्य-पापरूप विशेष की समीपता में पड़ता है, उसको पुद्गल की समीपता होने से चार गति का सहवास नहीं छूटता। जो पुद्गल अथवा स्वभाव से विरुद्ध विभाव की समीपता करता है, आदर-सत्कार-अभिनन्दन करता है, उसके लिये वह पुद्गल और विभाव दुःख का कारण बने बिना नहीं रहता और उसके फल में उसे चारगति में परिभ्रमण होता है। ●

## जड़ तो जड़ में है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 26 वीं गाथा के पश्चात् आये 40 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। श्लोक मूलत: इसप्रकार है ह्न

**अप्यात्मनि स्थितिं बुद्धत्वा पुद्गलस्य जड़ात्मन: ।**
**सिद्धास्ते किं न तिष्ठंति स्वस्वरूपे चिदात्मनि ।।40।।**

जड़ात्मक पुद्गल की स्थिति स्वयं में (पुद्गल में) ही जानकर अर्थात् जड़स्वरूप पुद्गल पुद्गल के निज स्वरूप में ही रहते हैं ह्न ऐसा जानकर, वे सिद्ध भगवन्त अपने चैतन्यात्मक स्वरूप में क्यों नहीं रहेंगे ? अर्थात् अवश्य रहेंगे।

जड़, जड़ में है; आत्मा में जड़ नहीं। तू तो चिदानन्द आत्मा है तेरे में कर्म नहीं और कर्म में तू नहीं, कर्म तुझे रुलाता नहीं; तू अपनी ही भूल से रुलता है। भूल एक समय की है, उसे गौण करके त्रिकालस्वभाव में झुके तो आत्मा का रुलना बंद हो। ऐसे ही स्वभाव में सिद्ध परमात्मा रमें हुए हैं।

जड़ के गुण-पर्याय आत्मा में आते नहीं। कर्म, कर्म की पर्याय में रहता है तो आत्मा अपनी ज्ञान की पर्याय में क्यों न रहे ? पुद्गल, पुद्गल में है ह्न ऐसा जानकर ही सिद्ध परमात्मा पुद्गल का लक्ष्य नहीं करते और अपने में ही रहते हैं। फिर यह संसारी आत्मा भी सिद्धस्वरूप प्रगट करके अपने में क्यों न रहे ? जड़, जड़ में है तो मेरा उसमें क्या काम है ? ह्न ऐसे विचार-चिन्तन से परमात्मापन प्रकट होता है।

अब पुद्गल का विशेष कथन करते हैं ह्न

**एयरसरूवगंधं दोफासं तं हवे सहावगुणं।**
**विहावगुणमिदि भणिदं जिणसमये सव्वपयडत्तं ।।27।।**

जो एक रसवाला, एक वर्णवाला, एक गंधवाला और दो स्पर्शवाला हो, वह स्वभावगुणवाला है; विभावगुणवाले को जिनसमय में सर्व प्रगट (सर्व इन्द्रियों से





ग्राह्य) कहा है।

चरपरा, कड़वा, कषायला, खट्टा और मीठा इन पाँच रसों में एक रस; सफेद, पीला, हरा, लाल और काला इन पाँच वर्णों में एक वर्ण; सुगन्ध और दुर्गन्ध में एक गंध; कठोर-कोमल, भारी-हल्का, शीत-ऊष्ण, स्निग्ध (चिकना) और रूक्ष (रूखा) इन आठ स्पर्शों में से अन्तिम चार स्पर्शों में अविरुद्ध दो स्पर्श; यह जिनेन्द्र देव के मत में परमाणु के स्वभाव गुण हैं। विभावपुद्गल विभावगुणात्मक होता है। यह द्वि-अणुकादिस्कन्धरूप विभावपुद्गल के विभावगुण सकल इन्द्रियसमूह द्वारा ग्राह्य (जानने में आने योग्य) हैं। ह्न ऐसा इस गाथा का अर्थ है।

इसी बात को आचार्य कुन्दकुन्ददेव श्री पंचास्तिकाय की 81वीं गाथा में कहते हैं ह्न एक रसवाला, एक वर्णवाला, एक गंधवाला और दो स्पर्शवाला परमाणु शब्द का कारण है, अशब्द है और भले ही स्कन्ध के भीतर हो; तथापि द्रव्य है अर्थात् सदैव सर्व से भिन्न, शुद्ध एक द्रव्य है।

यही मार्गप्रकाश नामक ग्रन्थ में भी कहा है ह्न परमाणु को 8 प्रकार के स्पर्शों में अन्तिम 4 स्पर्शों में से 2 स्पर्श, 1 वर्ण, 1 गंध तथा 1 रस समझना, अन्य नहीं।

देखो ! परमाणु में पाँच रसों में से एक होता है। अहा ! परमाणु का जो रस गुण है, वह तो त्रिकाल है, जबकि यह खट्टा, मीठा आदि तो पर्याय है, गुण नहीं। यहाँ 'गुण' शब्द प्रयोग किया है, परन्तु वह है पर्याय। आशय यह है कि रस परमाणु का त्रिकाली गुण है और खट्टा, मीठा, कड़वा आदि पर्याय है। अहा ! वह रसगुण इन पर्यायों में नहीं आया है, पर्यायरूप नहीं हो गया है; क्योंकि गुण तो ध्रुव-त्रिकाल है।

वर्ण शब्द में भी वर्ण गुण की बात नहीं है; क्योंकि वर्णगुण तो त्रिकाल है, जबकि यह सफेद, पीला इत्यादि तो उसकी पर्यायें हैं और उन पर्यायों को यहाँ गुण कहा गया है। यहाँ तो कहते हैं कि लाल, पीला इत्यादि पर्यायों में वर्णगुण अथवा द्रव्य नहीं आया है। अहा ! नित्य रंग-रस से भरपूर तत्त्व ऐसी पर्याय में नहीं आता। यह वीतराग का विज्ञान ही कोई अनोखा अलग जाति का है। **(क्रमश:)**

छहढाला प्रवचन

# मनुष्यगति के दुःखों का वर्णन

**जननी उदर वस्यो नव मास, अंग सकुचतैं पायो त्रास।**
**निकसत जे दुःख पाये घोर, तिनको कहत न आवे ओर।।१३।।**

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

तीन लोक में सुख का कारण ऐसा वीतराग-विज्ञान, वही जीव को हितरूप साररूप व मंगलरूप है। इसके बिना मिथ्यात्व से जीव संसार की चार गतियों में कैसे दुःखों को भोग रहा है ह्न उसका यह वर्णन चल रहा है। जीव के परिभ्रमण का हाल दिखाकर उससे छूटने का मार्ग दिखाना है। प्रथम एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के तिर्यंचों का दुःख तथा नरक का दुःख दिखाया; नरक में से निकलकर जीव या तो तिर्यंच होता है या मनुष्य होता है। यदि मनुष्य हो तो मनुष्यपने में भी कैसे-कैसे दुःख होते हैं? वे यहाँ दिखाये हैं ह्न

संसारभ्रमण करते हुए जीव को मनुष्य अवतार क्वचित् ही मिलता है। जीव ने चार गति के भवों में सबसे कम भव मनुष्यगति के किये हैं। बहुत बार नरक-तिर्यंच के दुःखों को भोगकर कठिनता से जब कभी मनुष्य हुआ तो उसमें सबसे पहले नव-मास तक तो माता के उदर में अत्यन्त सिकुड़कर बड़ी तंग हालत में रहा। स्वतंत्ररूप से हलन-चलन भी न कर सके ह्न ऐसी भीड़ में दबकर गर्भवासरूपी जेलखाने में नव-मास तक फँसा रहा। कोई तो नव-मास से भी अधिक लम्बे काल तक गर्भ में रहते हैं, तब माता-पुत्र दोनों बहुत त्रास पाते हैं। कोई-कोई जीव गर्भ में ही मर जाते हैं और फिर उसी स्थान में उपजते हैं। मनुष्य अवतार पाकर भी बहुत से जीव माता के पेट में ही मृत्यु पाकर मनुष्यभव पूरा कर देते हैं। अरे, एक मास जेल की कोटड़ी में बंद रहना पड़े तो भी कितना त्रास होता है? (यद्यपि जेल की कोटड़ी में तो चलने-फिरने की जगह मिलती है, जबकि माता के गर्भ में तो चलने-फिरने की जगह ही नहीं।) तो माता के गर्भरूपी अत्यन्त छोटी जेल में बंद होकर उलटे सिर नव मास तक जो कष्ट भोगा, उसकी क्या बात?





छोटी जगह में एक-दो घण्टे तक एक ही आसन पर बैठने से जीव को कैसी व्याकुलता हो जाती है? तो पेट के अन्दर थोड़ी-सी जगह में नव-मास तक रहने से उसको कितनी वेदना हुई होगी? छोटी-सी जगह में नव-मास तक रहा ह्न यह तो भूल गया और उसमें से बाहर आकर अब उसे बड़े-बड़े बँगले भी छोटे पड़ते हैं; बड़े-बड़े महल पाकर भी उसे संतोष नहीं होता। अपने स्वभाव की जो महत्ता है, उसकी पहचान न करनेवाला अज्ञानी जीव बाहर के महल वगैरह के द्वारा अपनी बड़ाई मानता है! दूसरे लोगों का बँगला-मोटर आदि वैभव देखकर वह ऐसा समझता है कि अरे, ये सब बढ़ गये और मैं पीछे रह गया! किन्तु अरे भाई! तुम्हारी सच्ची महत्ता तो ज्ञान से है; बाहर के वैभव से तुम्हारी महत्ता नहीं है।

श्री कुन्दकुन्दस्वामी कहते हैं कि आत्मा को ज्ञानस्वभाव के द्वारा इन्द्रियादि से अधिक जानो, भिन्न जानो। आत्मा अखण्ड ज्ञानस्वभावी है ह्न यही उसकी सबसे अधिकता है; ऐसे ज्ञानस्वभाव को जो जानता है, वही आत्मा महान है; और सब इसके सिवाय बाहर से अपनी महत्ता माननेवाले जीव दुःखी ही हैं, वे महान नहीं; अपितु तुच्छ हैं।

प्रत्येक आत्मा अनन्त गुणों का भंडार है; अनन्त गुणरत्नों की वह खान है। उसकी महानता की क्या बात? ह्न चक्रवर्ती या इन्द्रपद भी उसके समक्ष कुछ गिनती में नहीं है; वह तो उसके गुण की विकृति का (राग का-पुण्य का) फल है। ऐसे महान अनन्तगुण सम्पन्न आत्मा को दुःख का वेदन करना पड़े ह्न यह शोभा नहीं देता। अरे, चैतन्यदेव के दुःख की कथा कहनी पड़े ह्न यह तो शरम की बात है। यह आत्मा तो परम सुख का धाम है, अपने चैतन्यस्वरूप का मूल्य उसने न पहचाना, देह से भिन्न निजस्वरूप को न जाना और देह में ही अपनापन मानकर मोहित हो गया, इसकारण चारों गति में देह को धारण करता हुआ वह मोह से दुःखी हो रहा है। जीव को दुःख तो अपने राग-द्वेष-मोह का ही है, परन्तु लोगों को बाहर में संयोग ही दिखते है। इसप्रकार निमित्तरूप संयोग के द्वारा दुःख का वर्णन किया है।

यहाँ मनुष्यगति के दुःखों के कथन में गर्भ-जन्म संबंधी जो दुःख कहा, ऐसा दुःख तीर्थंकर को नहीं होता। जब माता के गर्भ में हो, उस वक्त भी उनको कष्ट नहीं होता, वे तो आराधक लोकोत्तर आत्मा हैं। माता के पेट में रहते हुए भी उनको अपनी

देह से भिन्न आत्मा का भान वर्त रहा है। यहाँ तो जिसको देहबुद्धि है ह्न ऐसे अज्ञानी के दुःखों की कथा चल रही है। जो ज्ञानी हुआ, वह तो सुख के पथ पर चलने लगा; अतः ऐसे दुःखों में से बाहर निकल गया, वह तो आनन्द के साथ मोक्षसुख को साध रहा है।

संसार में प्रथम तो मनुष्यपना मिलना ही कठिन है; यदि कदाचित् दुर्लभ मनुष्यपने की प्राप्ति हुई तो उसमें भी आत्मज्ञान के बिना जीव दुःखी ही रहा; आत्मा को भूलकर देह की दृष्टि से उसने अनेक तरह के दुःख भोगे। नव मास तक गर्भ के अशुचिस्थान में रहने के बाद जब जन्म होता है, तब भी बहुत त्रास पाता है। कई बार जन्म होने के समय की असह्य पीड़ा से ही मृत्यु हो जाती है; माता का मुख भी नहीं देख पाता। जन्म होने के बाद माता उसको गोदी में ले और उसके ऊपर माता की नजर पड़े ह्न इसके पहले तो वह अनित्यता की गोद में जा पड़ता है।

यह लड़का है या लड़की? इसकी जानकारी माता को हो, उसके पहले तो उसकी आयु में से असंख्यात समय कम हो चुके हैं। अनेक मनुष्य तो जन्म होते ही मर जाते हैं; उसकी माता के देखने के पहले तो वह अन्य भव में चला जाता है। अनेक जीव माता के गर्भ में ही मर जाते हैं। कभी-कभी जन्म होने के समय के तीव्र कष्ट से माता-पुत्र दोनों मर जाते हैं। ऐसे गर्भ, जन्म व मरण के महान दुःखों से यह संसार भरा है। संसार में ऐसा दुःख जीव खुद भोग ही रहा है, फिर भी उससे छूटने की तो वह परवाह नहीं करता और दूसरों से अपनी अधिकाई दिखाने के अभिमान में ही अवतार खो देता है। संसार में भ्रमण करते हुए जीव को मनुष्य पर्याय के मिलने मात्र से दुःख नहीं मिट जाता। मनुष्य होकर यदि आत्मज्ञान करे, तब ही उसका दुःख मिटता है; परन्तु मनुष्य होकर के भी जो जीव धर्म पाने की दरकार नहीं करता, वह तो चार गति के चक्कर में दुःखी ही रहता है। उसके लिए कहते हैं कि ह्न

**बहु पुण्य पुंज प्रसंग से, तुझे शुभदेह मानव का मिला।**
**तो भी अरे! भवचक्र का, फेरा न कभी टला।।**

अरे भाई! बहुत पुण्य के द्वारा तुझे ऐसा मनुष्यभव मिला, उसमें भी यदि आत्मा की पहचान नहीं करेगा तो तेरा भवचक्र का भ्रमण कैसे मिटेगा? आत्मज्ञान के बिना जीव मनुष्य से फिर नरक-तिर्यंचादि में रुलता है। यह मनुष्यपना सदैव टिकनेवाला नहीं है। अतः इन्द्रियसुखों के पीछे उसको मत गँवाना, लक्ष्मी कमाने में जीवन बरबाद मत करना; क्योंकि ह्न

**'यह नरभव फिर मिलन कठिन है जो सम्यक् नहीं होवे।'** ●



# ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

**प्रश्न :** भरतक्षेत्र का जीव मरकर सीधा विदेह में जन्म लेता है क्या ?

**उत्तर :** हाँ; यदि मिथ्यादृष्टि है, तो विदेह में जन्म ले सकता है। परन्तु आराधक मनुष्य मरकर कर्मभूमि के मनुष्यों में(विदेहादि में) जन्म नहीं लेता ह्न ऐसा नियम है। विराधक जीव तो चाहे जहाँ जन्म ले सकता है। कदाचित् किसी मनुष्य को पूर्व में मिथ्यात्व दशा में मनुष्यायु का बंध हो गया हो, पश्चात् सम्यक्त्व (क्षायिक) प्राप्त हो जाये तो वह आराधक जीव मरकर मनुष्य में उत्पन्न होगा, परन्तु वह असंख्यात वर्ष की आयुष्यवाली भोगभूमि में मनुष्य होगा, कर्मभूमि में जन्म नहीं लेगा ह्न ऐसा नियम है। विदेहक्षेत्र भी कर्मभूमि है। भोगभूमि में चतुर्थ गुणस्थान से ऊपर का कोई गुणस्थान नहीं होता और वहाँ का जीव मरकर नियम से स्वर्ग में ही जाता है।

**प्रश्न :** केवली के शरीर में निगोदिया जीव होते हैं क्या ?

**उत्तर :** नहीं; केवलज्ञानी का परमौदारिक शरीर होता है, अत: उसके आश्रय से निगोदिया जीव नहीं होते। यद्यपि आकाश के उसी क्षेत्र में होते हैं; क्योंकि लोक में सर्वत्र निगोदिया जीव भरे पड़े हैं; तथापि वे जीव परमौदारिक शरीर के आश्रित नहीं हैं। केवली का परमौदारिक शरीर, मुनि का आहारक शरीर, देवों का तथा नारकियों का वैक्रियक शरीर तथा पृथ्वीकाय, अपकाय, वायुकाय और तेजोकाय ह्न इन स्थानों के आश्रय से निगोदिया जीव नहीं होते।

**प्रश्न :** आकाश के एकप्रदेश में अनन्त परमाणु और अनन्त जीवों के प्रदेश कैसे रह सकते हैं ?

**उत्तर :** जिसका जो स्वभाव हो, उसमें कोई मर्यादा या हद नहीं हो सकती; स्वभाव तो सदैव अमर्यादित और असीम ही होता है। लोक में स्थित अनन्त परमाणु सूक्ष्मरूप से आवें तो उन्हें आकाश का एक प्रदेश अवगाहन देता है; ऐसा अवगाहन देने का

आकाश का अमर्यादित स्वभाव है। आकाश के एकप्रदेश में इतना असीम सामर्थ्य है कि अनन्त पुद्गलों और अनन्त जीवों के प्रदेशों को तथा धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और काल के एक-एक प्रदेश को एक साथ अवगाहन दे सकता है।

जितने क्षेत्र में एक परमाणु रहता है, आकाश का एकप्रदेश उतने ही मापवाला होता है; किन्तु उसमें अनन्त को अवगाहन देने की अमाप सामर्थ्य है।

देखो ! यह सारी बातें कहने का मूल तात्पर्य तो इन सबको जाननेवाली एक समयवर्त्ती ज्ञान पर्याय की सामर्थ्य बताने का है।

एक समय की ज्ञानपर्याय अनन्तानन्त पदार्थों को , उनकी भूत-भविष्य की पर्यायों सहित जान लेती है। अरे ! जब जड़रूप आकाश का एकप्रदेश अनन्त रजकण को स्थान दे सकता है, तो उसको जाननेवाले जीव के ज्ञायकस्वभाव की सामर्थ्य का क्या कहना ? वह तो अमर्यादित, अमाप और अनन्त है ही। गजब बात है !

अरे ! यह तो अपने हित की बात है; दूसरों को समझाने के लियें नहीं । अपने ज्ञान की सामर्थ्य स्वयं समझकर, श्रद्धा में लेकर अन्दर में समाने के लिए है।

श्रीमद् राजचंद्रजी कहते हैं कि ह्न ''जो समझा, वह समा गया, बाह्य में कहने के लिये रुका नहीं'' अहा हा ! ऐसे स्वभाव का माहात्म्य जिस पर्याय में आया, वह पर्याय अन्दर में प्रविष्ट हुए बिना रहे नहीं, और भगवान आत्मा से भेंट करे ही।

**प्रश्न :** एक पुद्गल परमाणु के दो टुकड़े नहीं हो सकते, क्योंकि वह अत्यंत छोटा है, तो फिर उसमें अनन्त गुण किसप्रकार हो सकते हैं ?

**उत्तर :** एक परमाणु के दो भाग नहीं हो सकते; इतना सूक्ष्म होने पर भी उसमें अनन्त गुण (जीव के गुणों के समान) हैं। अहा हा ! ऐसा वस्तु का स्वभाव सर्वज्ञ ने देखकर, जानकर कहा है। आत्मा स्वयं ही सर्वज्ञस्वभावी है। एक परमाणु और उसके अनन्त परमाणुओं का एक स्कन्ध तथा ऐसे अनन्त स्कन्धों का एक महास्कन्ध ह्न इन सब को जाननेवाला आत्मा सर्वज्ञस्वभावी है। इस सर्वज्ञस्वभावी आत्मा की सच्ची श्रद्धा करनी है; क्योंकि श्रद्धा-ज्ञान को सम्यक् किये बिना समस्त तप-त्याग संसार भ्रमण के कारण हैं।



# समाचार दर्शन ह्न

## पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

1. **बदरवास (शिवपुरी-म.प्र.) :** यहाँ दिनांक 15 से 20 जनवरी, 08 तक जैन कॉलोनी स्थित नवनिर्मित श्री महावीर दिगम्बर जिनमंदिर के लिये श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर के प्रतिदिन ग्रंथाधिराज समयसार पर अध्यात्मरस से सराबोर प्रवचनों का उपस्थित जन समुदाय ने लाभ लिया। दीक्षाकल्याणक के प्रसंग पर आपने **आहारदान** से संबंधित मार्मिक बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। आपके अतिरिक्त पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के भी प्रवचन हुए।

प्रतिष्ठा के दौरान प्रतिदिन दोनों समय गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन का लाभ मिला।

महोत्सव में बालक ऋषभकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती एवं श्री गिरनारीलालजी सर्राफ बदरवास को मिला। सौधर्म इन्द्र श्री सतीशचंदजी जैन (ठेकेदार) ग्वालियर एवं कुबेर इन्द्र श्री विनयकुमारजीजैन बदरवास थे।

महोत्सव की सम्पूर्ण प्रतिष्ठाविधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के कुशल निर्देशन में सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य पण्डित मधुकरजी जलगाँव, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिंदवाड़ा, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली एवं पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री अभाना ने सम्पन्न कराई।

ज्ञानकल्याणक के दिन दिल्ली से आई विशेष पार्टी द्वारा 'णमोकार मंत्र की महिमा' एवं 'मतलब का संसार' नाटक का मंचन किया गया। महोत्सव के दौरान सीमंधर संगीत सरिता, छिन्दवाड़ा के अध्यात्मरस गर्भित भक्ति गीतों ने सभी का मन मोह लिया।

सम्पूर्ण कार्यक्रमों में श्री अभयकुमारजी, श्री सुरेशचन्दजी शिवपुरी एवं पण्डित राहुलजी शास्त्री का विशेष सहयोग रहा। साथ ही पण्डित अमितजी लुकवासा एवं पण्डित अंकितजी कोलारस का समागम प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर 8700 घण्टों के सी.डी.प्रवचन एवं लगभग 52 हजार रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा।

**कोलारस (म.प्र.) :** यहाँ बदरवास पंचकल्याणक से पूर्व 14 जनवरी, 08 को रात्रि में समाज के विशेष आग्रह पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल पधारे। आपके '**मैं स्वयं भगवान हूँ**' विषय पर हुये प्रवचन को उपस्थित जन समुदाय ने मन्त्र-मुग्ध होकर सुना। इस अवसर पर स्थानीय विद्वान पण्डित मांगीलालजी, पण्डित किशनमलजी, पण्डित गिरनारीलालजी आदि उपस्थित थे। सभी स्थानीय विद्वानों एवं एडवोकेट चिंतामणिजी ने डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन किया साथ ही वर्ष 2009 में लगनेवाले प्रशिक्षण-शिविर को कोलारस में लगाने की माँग की।

**2. सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) :** यहाँ परमपूज्य गुरुदत्त भगवान की निर्वाण भूमि लघु सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा श्री 1008 महावीरस्वामी दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन दिनांक 5 से 11 फरवरी, 2008 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में अन्तर्राष्टीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन ग्रंथाधिराज समयसार की १९ वीं गाथा पर हुये मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला आपके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, दादा विमलचन्दजी झांझरी उज्जैन, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलालीएवं ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' के प्रवचनों का लाभ मिला।

पंचकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली द्वारा सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्र.धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, पण्डित मधुकरजी जलगाँव, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली, पण्डित संदीपजी बड़ामलहरा, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित सुनीलजी भोपाल, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री कोटा आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई गई।

महोत्सव के सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री महीपालजी ज्ञायक बाँसवाड़ा के निर्देशन में सम्पन्न हुए। कार्यक्रमों का कुशल संयोजन सेठ गुलाबचंदजी जैन सागर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा ने किया।

महोत्सव में बालक वर्द्धमान के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती विमलादेवी-श्रीकोमलचन्दजी टडावालों को प्राप्त हुआ। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी मस्तांई प्रमोद-निशा जैन घुवारा थे। कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्रीदिलीपभाई-कमलाक्षी शाह मुम्बई एवं महोत्सव के यज्ञनायक श्री निहालचन्द-श्रीमती अचरजबाई जैन जयपुर थे।

दिनांक 5 फरवरी को कार्यक्रम का शुभारंभ श्री महावीरप्रसादजी जैन फिरोजाबाद के कर कमलों से ध्वजारोहणपूर्वक हुआ। सिंहद्वार का उद्घाटन डॉ. वासंतीबेन मुम्बई, प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री माणकलालजी ठाकुर्डिया उदयपुर, पंचकल्याणक विधान एवं प्रतिष्ठामंच का उद्घाटन सेठ गुलाबचन्दजी जैन सागर, यागमण्डल विधान उद्घाटन श्री अशोककुमारजी जैन भोपाल , एवं पालना झूलन का उद्घाटन श्री सुरेन्द्र प्रताप सिंह बेबीराजा (अध्यक्ष- बन्देलखण्ड विकास प्राधिकरण) ने किया।

रात्रि में इन्द्रसभा/राजसभा के अतिरिक्त आचार्यअकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय ध्रुवधाम बांसवाड़ा एवं सिद्धायतन-द्रोणगिरि के छात्रों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का मंचन किया गया । महोत्सव को आकर्षक बनाने हेतु सीमंधर संगीत सरिता छिन्दवाड़ा एवं टोडरमल संगीत सरिता जयपुर ने प्रासंगिक गीतों का रसास्वादन कराया।

महोत्सव के दौरान डॉ.ममता जैन ध.प.श्री राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा के शोध प्रबन्ध





**'कानजीस्वामी के प्रवचन साहित्य का अनुशीलन'** एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा रचित **'भक्ति संग्रह'** पुस्तक के साथ ही पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा निर्मित बच्चों की वी.सी.डी. ह्न **'करलो जिनवर की पूजन'** का विमोचन हुआ।

सिद्धायतन परिसर में निर्मित बीस तीर्थंकर जिनालय एवं स्वाध्याय भवन का उद्घाटन श्री भबूतमल चम्पालाल रमेशजी भण्डारी परिवार बैंगलोर की ओर से श्री ब्रह्मदेवजी जैन बैंगलोर ने किया। समवशरण जिनालय का उद्घाटन श्री जैन बहादुर जैन परिवार कानपुर, मानस्तम्भ का उद्घाटन श्री मुकेशकुमारजी जैन देवलाली ने किया।

महामहोत्सव को सफल बनाने में क्षेत्रीय मुमुक्षु मण्डलों तथा फैडरेशन शाखाओं के अतिरिक्त सिद्धक्षेत्र कमेटी एवं उदासीन आश्रम ट्रस्ट द्रोणगिरि इत्यादि अनेक संस्थाओं का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। समिति के संरक्षक माननीय कपूरचंदजी घुवारा के प्रयासों से प्रशासन का भी भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।

**विद्वत्सम्मान ह्न** महामहोत्सव के मध्य तप कल्याणक के अवसर पर दिनांक 9 फरवरी,08 को डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष विद्वानों के सम्मान के क्रम में जैनदर्शन के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में किये गये विशिष्ट कार्यों के लिये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के मैनेजर **पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर** का सम्मान किया गया।

पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा ने सम्मानमूर्ति का परिचय दिया तथा पण्डित अभयकुमारजी देवलाली एवं क्षेत्र के उपमंत्री श्री भागचन्दजी बड़ामलहरा ने उनके बारे में अपने विचार व्यक्त किये। आपको प्रशस्ति, शॉल, श्रीफल एवं दस हजार रुपये की मानधन राशि से पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, दादा विमलचन्दजी झांझरी, पण्डित उत्तमचन्दजी जैन, ब्र. सुमतप्रकाशजी, श्री महीपालजी ज्ञायक, श्री बीनूभाई आदि मंचासीन थे। सभा की अध्यक्षता क्षेत्रीय विधायक श्री कपूरचन्दजी घुवारा ने की। कार्यक्रम का संचालन ट्रस्ट के महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, मुम्बई ने किया।

**विचार गोष्ठी का आयोजन ह्न** ज्ञानकल्याणक के प्रसंग पर रात्रि में श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के छात्र विद्वानों द्वारा क्रमबद्धपर्याय : एक अनुशीलन विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके अध्यक्ष श्री विमलजी जैन नीरु कैमिकल्स थे। मुख्यअतिथि श्री कमलजी पाटनी थे। गोष्ठी में विवेक जैन दलपतपुर, सुधीर जैन अमरमऊ, विवेक जैन सागर, अनेकान्त भारिल्ल मुम्बई एवं संतोष जैन बकस्वाहा ने अपने विचार व्यक्त किये। संचालन चैतन्यप्रकाश बकस्वाहा एवं मंगलाचरण दीपेश शास्त्री अमरमऊ ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री जयपुर ने किया।

प्रतिष्ठा महोत्सव में पूरे देश से हजारों मुमुक्षु भाई-बहिनों ने पधारकर धर्मलाभ लिया। इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से ७९ हजार ५७२ रुपये का सत्साहित्य एवं ५७ हजार ३१२ घण्टों के डी.वी.डी. एवं सी.डी कैसिट्स घर-घर पहुँचे। ●

## देवलाली में विशेष शिविरों का आयोजन

पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट अत्यंत हर्ष के साथ निवेदन कर रहा है कि गत वर्षानुसार इस वर्ष भी देवलाली में विशेष शिविरों का आयोजन किया जा रहा है।

इन शिविरों की खास विशेषता यह है कि एक ही वक्ता लगातार 5 दिन प्रतिदिन 6 घंटे एक ही विषय लेंगे।

**प्रथम 'सम्यग्ज्ञानचंद्रिका शिविर'** डॉ. उज्जवला शहा के माध्यम से दिनांक 26 मार्च 08 से 30 मार्च 08 तक आयोजित होगा तथा **द्वितीय 'जैन सिद्धान्त शिविर'** पण्डित दिनेशभाई शहा द्वारा दिनांक 24 मई 08 से 28 मई 08 तक आयोजित होगा।

इन दोनों ही शिविरों में आवास एवं भोजन की व्यवस्था न्यूनतम शुल्क के साथ रखी गई है। सभी साधर्मियों को दोनों ही शिविरों का लाभ लेने के लिए सादर हार्दिक आमंत्रण है। आपके आगमन की पूर्व सूचना निम्न पते पर देवें। ह्न पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, कहान नगर, बेलतगाँव रास्ता, लाम रोड़, देवलाली, नासिक (महा.) फोन-0253-2491044

## मंगलार्थी छात्रों को अपूर्व अवसर

तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ़ में आत्मार्थी छात्रों को आध्यात्मिक एवं लौकिक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन संचालित है।

यहाँ कक्षा 9 से उन छात्रों को प्रवेश दिया जायेगा, जिन्होंने अंग्रेजी अथवा हिन्दी माध्यम से कक्षा 8 में न्यूनतम 60 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हैं तथा जो शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन में रुचि रखने के साथ ही मंगलायतन एवं विद्यानिकेतन की चर्या और नियमों का पालन कर सकें।

यहाँ अध्ययन करनेवाले छात्रों के आवास, भोजन एवं धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था नि:शुल्क है तथा उन्हें उच्चस्तरीय लौकिक शिक्षा सशुल्क प्रदान की जाती है।

जो छात्र प्रवेश के लिए इच्छुक हों, वे शीघ्र ही कार्यालय में पत्र लिखकर आवेदन-पत्र मंगा लेवें। यहाँ हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में पात्रता परीक्षा के माध्यम से प्रवेश दिया जायेगा व विद्यानिकेतन में प्रवेश हेतु पात्रता-शिविर में आने के लिए आपको सूचित किया जायेगा।

अंग्रेजीव हिन्दीमाध्यम के लिए आवेदन पत्र जमा कराने की अंतिम तिथि क्रमश: 20 फरवरी एवं 30 मार्च हैं। प्रवेश हेतु स्थान सीमित हैं; अत: प्रवेश के इच्छुक छात्र निम्न पते पर सम्पर्क करें।

ह्न भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन
तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ़-आगरामार्ग,
सासनी-204216 (उ.प्र.)
मो.-09997996346, 09897234019, 09897890893





## वैराग्य समाचार

**1.औरंगाबाद (महा.) निवासी श्री कल्याणमल हजारीलालजी गंगवाल** का दिनांक 10 दिसम्बर, 07 को देहावसान हो गया। आप अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र सर्वेक्षण कमेटी के सम्मानित सदस्य थे इसके साथ ही आप पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से भी जुड़े रहे तथा दशलक्षण पर्व पर भी आपका योगदान ट्रस्ट को मिलता रहा।

आपकी स्मृति में जैन पथप्रदर्शक व वीतराग-विज्ञान को कुल 501 रुपये प्राप्त हुये हैं।

**2.बेंगू (राज.) निवासी श्रीमती केशरबाई टोंग्या धर्मपत्नी श्री कैलाशचंदजी टोंग्या** का दिनांक 27 नवम्बर, 07 को देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैन पथप्रदर्शक व वीतराग-विज्ञान को कुल 2100/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

**3. लूणदा (उदयपुर) निवासी** श्री चांदमलजी ललितकुमारजी किकावत की मातुश्री श्रीमती शोभागबेन ध.प. श्री गोरीलालजी किकावत का मंगलवार, दिनांक 29 जनवरी, 08 को प्रात: 6.30 बजे 82 वर्ष की आयु में शांत परिणामों से देहावसान हो गया। आप धार्मिक एवं स्वाध्यायी महिला थीं। आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा 1100/-रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

**4. टीकमगढ़ (म.प्र.) निवासी** श्री हुकमचंदजी वैशाखिया (चूना व्यवसायी) 24 जनवरी, 08 को आकस्मिक निधन हो गया है। आप समन्वय-वाणी के सम्पादक श्री अखिल बंसल जयपुर के श्वसुर थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही निर्वाण प्राप्त करें ह्न यही भावना है।

## धर्म प्रभावना

**1. सोनागिरी :** यहाँ दिनांक व 14 फरवरी 2008 को श्री सोनागिरी ट्रस्ट के वार्षिकोत्सव के प्रसंग पर डॉ. भारिल्ल के ''समयसार का सार'' इस विषय पर दो व्याख्यान हुए. इस प्रसंग पर पंडित ज्ञानचंदजी जैन विदिशा और पंडित राजेंद्रकुमारजी जैन जबलपुर भी उपस्थित थे।

**2.**दिनांक 8 से 10 फरवरी तक श्री जमनालालजी प्रकाशचन्दजी सेठी परिवार जयपुर की ओर से **श्रवणबेलगोला** की त्रि-दिवसीय ससंघ तीर्थयात्रा के अवसर पर प्रवचन, तत्त्वचर्चा, पूजन-भक्ति एवं ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं का सुन्दर आयोजन किया गया।

इस अवसर पर भट्टारक स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी के मंगल प्रवचन के अतिरिक्त श्री संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही श्री कैलाशचन्दजी सेठी एवं श्री प्रकाशचन्दजी सेठी के लोगों में तत्त्वज्ञान की रुचि जाग्रत करने हेतु मार्मिक उद्बोधनों का लाभ प्राप्त हुआ। कार्यक्रम श्री योगेशजी टोडरका के कुशल निर्देशन में अजयजी गोधा, संजयजी, अमितजी, विवेकजी एवं अभिषेकजी के सहयोग से सम्पन्न हुये। **ह्न सौरभ जैन**

# आत्मार्थी छात्रों को अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें ह्न इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दि.जैन सि. महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें लगभग 162 छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 497 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 54 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को राज. संस्कृत वि.वि.की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए.एस.जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को योग्यतानुसार दो वर्ष का राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर (राज.) का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी है, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

**उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सैकेण्डरी (दसवी) परीक्षा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।**

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, बाल ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

आगामी सत्र 20 जून, 08 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है, अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही निम्नांकित पते से प्रवेशफार्म मंगाकर अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **मंगलायतन-अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश) में 18 मई से 4 जून, 2008 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक (18 दिन) रहना अनिवार्य होगा।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं। दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होने पर भेजें।

**– अलीगढ़ का पता –**
तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ़-आगरामार्ग,
सासनी-204216 (उ.प्र.)
मो.09997996346, 9897234019

**पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** (प्राचार्य)
श्री टोडरमल दि.जैन सि.महाविद्यालय,
ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
फोन : 0141-2705581, 2707458